रोज़े की अहमियत

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत काब रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम से कहा मिंबर लाओ, हम मिंबर लेकर आये, जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मिंबर की पहली सीढ़ी पर चढ़े तो फरमायाः आमीन, जब दूसरी सीढ़ी पर चढ़े तो कहाः आमीन इसी तरह जब तीसरी सीढ़ी पर चढ़े तो फरमायाः आमीन जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मिंबर से नीचे आये तो हम ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! आज हम ने आप से एक बात सुनी जो इससे पहले नहीं सुनी थी। आप ने फरमाया कि मेरे पास जिबराईल आये उन्होंने कहा कि उस शख्स के लिये हिलाकत हो जो रमज़ान का महीना पाया और अपने गुनाहों की मग़्फिरत नहीं करा सका, इसके जवाब में मैंने आमीन कही। जब मैं दूसरी सीढ़ी पर चढ़ा तो जिब्राईल ने कहा कि उस शख्स के लिये हिलाकत है जिसके पास मेरा नाम लिया जाये और वह मुझ पर दुरूद न भेजे तो मैंने इसके जवाब में आमीन कही। जब मैं तीसरी सीढ़ी पर चढ़ा तो जिब्राईल ने कहा उस शख्स के लिये हिलाकत हो जो अपने मां बाप या दोनों में से किसी एक को बुढ़ापे की हालत में पाया और उनकी सेवा करके जन्नत नहीं हासिल की, मैंने इसके जवाब में कहाः आमीन!

एक दूसरी रिवायत में है अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब रमज़ान की पहली रात होती है तो शैतान और उजड जिन जजीरों में जकड़ दिये जाते हैं, जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं इसका कोई दरवाज़ा नहीं खुला होता है, जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और इसका कोई दरवाज़ा बन्द नहीं होता। पुकारने वाला पुकारता है ऐ भलाई के चाहने वाले! भलाई के काम में आगे बढ़ो और ऐ बुराई के चाहने वाले अपनी बुराई से रूक जाओ, कुछ को अल्लाह जहन्नम की आग से आज़ाद कर देता है और यह रमज़ान की हर रात को होता है। (सुनन तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, यह हदीस सहीह है)

हदीस की इन दोनों रिवायतों में रमज़ान के रोज़ों की अहमियत और रोज़ा रखने से मग्फ़िरत की खुशखबरी सुनाई गई है, यह बरकतों का महीना है, इसलिये हम तमाम लोगों को रमज़ान के महीने में रोज़ा रखने में किसी तरह का बहाना और लापरवाही नहीं करनी चाहिये। जैसा कि देखा जा रहा है कि लोग मामूली मामूली बहाना बना कर रोज़े जैसी महान इबादत को छोड़ देते हैं, अल्लाह तआला से दुआ है कि हम तमाम लोगों को रमज़ान के महीने के रोज़े रखने की क्षमता दे।

मासिक

इसलाहे समाज

मार्च 2024 वर्ष 35 अंक 3

रमज़ानुल मुबारक 1445 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, A-145 गली न० 8 चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-53 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1.	रोज़े की अहमियत	02
2.	रोज़े की बरकत	04
3.	आज़माइश नेमत में बदल जाती है	06
4.	ईमान (आस्था) का प्रशिक्षण	07
5.	कुरआन के अल्लाह की ग्रन्थ होने की दलील	09
6.	इस्लाम	12
7.	रमज़ान के रोज़े की अहमियत व फज़ीलत	17
8.	इस्लाम में जानवरों के अधिकार	20
9.	ऐलाने दाखिला	24
10.	अय्यूब अलैहिस्सलाम	25
11.	अपील	27
12.	अहले हदीस मंज़िल (विज्ञापन)	28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com

अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है

वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

सम्पादकीय

रमज़ान की बरकत

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

रमज़ान का महीना मुसलमानों के लिये असंख्य मदद और सफलता के अवसर लेकर आता है, शैतानों को जकड़ दिया जाता है, जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिय जाते हैं। आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं। नेकियाँ और ख़ज़ाने समेटन वालों के लिये खुली छूट और पुकार होती है कि आगे बढ़ो और बुरा करने वालों को बुराई से रूकने का निर्देश और चेतावनी होती है। रोज़ा रखने की वजह से बन्दा अत्यंत दौलत और नेकियों के इंआम से माला माल किया जाता है। वक़्त पर इफ़्तारी करने, कराने से मुसलमान आख़िरत में अल्लाह से मिलने का सर्टीफिकेट हासिल कर लेता हैं रोज़ेदार को इफ़्तार कराने वाला रोज़ेदार के बराबर सवाब बटोरता है सेहरी खा कर अल्लाह को खुश और बरकत हसिल करता है। तरावीह और रात की इबादत के ज़रिये गुनाहों के बोझ से छुटकारा और मग़्फिरत का परवाना हासिल कर लेता है। पवित्र कुरआन की तिलावत के ज़रिये अपने दरजात को बुलन्द कर लेता है और अपने क़सद को पा लेता है। सदक़ा खैरात के ज़रिये गरीबों का दिल जीतता जन्नत खरीदता और मुसीबत को टाल देता है। मुसीबत और रोग से छुटकारा पाता है। सेहत की गारन्टी हासिल करता है। सफाई सुथराई उसकी जिन्दगी का हिस्सा बन जाती है। तक़्वा और अल्लाह से भय का पात्र हो जाता है और इसके ज़रिये वह अल्लाह से करीब और उसका प्रिय बन जाता है। दुनिया की सभी मुसीबतें उससे छट और हट जाती हैं उसके लिये भलाई के सभी रास्ते खुल जाते हैं। विकास और निमार्ण के बन्द रास्ते खुल जाते हैं। छोटे और महा पाप से बच जाता है और आम मआफी और मग़्फिरत का पात्र बन जाता है, झूठ, हसद जलन आर दूसरी बुराइयों से पवित्र रहता है और इस तरह पूरा समाज बहुत सी समाजी खराबियों से पवित्र और शान्तिपूर्ण रहता है। लड़ाई झगड़ों से कोसों दूर होता है और अगर काई झगड़ा करना चाहता है तो साफ कह देता है कि मैं इस झंझट, झमेले और धोके में नहीं आ सकता क्योंकि मैं रोज़ेदार हूं यानी जब रब की दी हुई हलाल रोज़ी और पवित्र पानी से अपने आप को रोके रखा है तो झगड़ा, फसाद दुश्मनी, हसद जलन और गाली गुलूच से क्यों न दूर रहूं और इससे अपने आप पर कन्ट्रोल क्यों न करूं।

इस महीनें में शबे कद्र जैसी महान रात है जिस में इबादत हज़ार रोज की इबादत से बेहतर है। ज़कात व खैरात अदा करके अपने अपने माल और शरीर को पाक कर लेता है और रैयान दरवज़े से पुकारे जाने

का पात्र बन जाता है यह रोज़ेगदारों के लिये अल्लाह की तरफ से विशेष इंआमात हैं लेकिन अल्लाह का यह फैज़ान (लाभ) सिर्फ मोमिनों के लिये खास नहीं है जो रमज़ान के मुबारक महीने में हासिल होता है बल्कि यह लाभ साधारण है जो बाज पहलू से पूरे संसार के लिये साधारण है। रमज़ान का चांद देखते ही मोमिन यह दुआ करता है।

''ऐ अल्लाह! इस चांद को हम पर शान्तिपूर्ण, ईमान और सुरक्षा व इस्लाम के साथ निकाल ऐ चांद मेरा और तुम्हारा रब अल्लाह ही है ऐ अल्लाह यह मार्गदर्शन और भलाई का चांद हो।''

यह अम्न व शान्ति का सन्देश कितना साधारण है जिस का मोहताज पूरा संसार है, पूरी सृष्टि है, वरना बुराई और फितना व फसाद से पूरी सृष्टि परशानी में लिप्त हो जाती है।

रमज़ान का महीना पवित्र कुरआन का महीना है यह कुरआन पूरे संसार के लिये अल्लाह का मार्गदर्शन है। पूरी मानवता के लिये इसमें मार्गदर्शन की स्पष्ट दलीलें और सुबूत है। सबसे अच्छा और सुगम जीवन गुज़ारने का सामान है। सबसे सीधे रास्ते की तरफ मार्गदर्शन करने वाली है। दिलों और शरीर की बीमारियों के लिये दवा है इसको अपनाकर कौमें उत्थान प्राप्त कर सकती हैं और इसको छोड़ कर अपमान और पतन का शिकार हो कर हलाक व बर्बाद हो जाती हैं। पूरी दुनिया सत्य की तलाश में है और अम्न व शान्ति वाले दीन के इन्तेज़ार में है और वह दीन इस्लाम है जो शान्ति और सुरक्षा की गारन्टी देता है। पवित्र कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः रमज़ान वह महीना है जिस में पवित्र कुरआन उतारा गया जो लोगों को मार्गदर्शन करने वाला है और जिस में मार्गदर्शन और सत्य व असत्य की तमीज़ की निशानियां हैं। (सूरे बक़राः१८५)

अल्लाह से दुआ है कि वह हमें ईमान की दौलत से सब को मालामाल कर दे, सबकी मगफिरत फरमा दे, और रंज व गम से छुटकारा देकर दुनिया व आखिरत की कामियाबी दे। आमीन

❑❑❑

इस्लाहे समाज
खरीदारी फार्म

पत्रिका को घर पर मंगवाने के लिये अपने पते में निम्न विवरण ज़रूर लिखें।

नाम.....

पिता का नाम.....

स्थान.....

पोस्ट आफिस.....

वाया.....

तहसील.....

जिला.....

पिन कोड.....

राज्य का नाम.....

मोबाइन नम्बर.....

अपना मनी आर्डर इस पते पर भेजें।

आफिस का पताःअहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6

बैंक और एकाउन्ट का नामः

Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind

A/c No. 629201058685 (ICICI Bank) Chani Chowk, Delhi-6

RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292

नोटः-बैंक द्वारा रक़म भेजने से पहले आफिस को सूचित करें।

आज़माइश नेमत में बदल जाती है

नौशाद अहमद

हालात बदलते रहते हैं, उतार-चढ़ाव संसार की व्यवस्था का एक भाग है। कोई गरीबी से अमीरी की तरफ बढ़ता है, कोई अमीरी से गरीबी की हालत में चला जाता है। इसी तरह इन्सान का जीवन भी है, बचपन से जवानी की तरफ बढ़ता है, फिर धीरे ध ीरे बुढ़ापे की तरफ अग्रसर हो जाता है। हालात का यह बदलाव हमारे कर्मों पर भी निर्भर है। समाज के लोग जिस तरह का कर्म करेंगे, उनका व्यवहार जिस प्रकार से होगा, उसी तरह का समाज वुजूद में आता है, यह स्थिति हम अपने चारों तरफ और आस-पास में देखते रहते हैं, स्थिति का यह बदलाव इन्सान को यह सोचने पर विवश करता है कि सब इन्सान के बस में नहीं है बल्कि संसार के पालनहार के हाथ में है जो कुछ भी सकारात्मक बदलाव होता है इन्सान के अच्छे कर्म की वजह से होता है।

हालात के इस बदलाव से निराशा की स्थिति नहीं पैदा होनी चाहिये, क्योंकि निराशा इन्सान को हर एतबार से कमजोर कर देती है, शारीरिक तौर पर भी, ईमान के एतबार से, भी। इसलिये जब भी निराशा की भावना उत्पन्न हो तो अपने पालनहार की तरफ पूरी तरह से पलट जाना चाहिए।

इतिहास गवाह है कि पिछले दिनों में हालात में उतार-चढ़ाव आये हैं, निराशा की स्थिति उत्पन्न हुई है, कभी कभार ऐसा भी हुआ है कि सब कुछ हाथ से निकल गया लेकिन फिर ऐसा भी वक़्त आया कि सब कुछ वापस आ गया है। यह सुगम बदलाव हमें यह शिक्षा और सीख देता है कि हम हालात से निराश न हों, ईमान को मजबूत बनायें, पालनहार ने हमें अपने आदेशों पर जिस तरह चलने के लिये कहा है, उसका अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लें, शोर शराबे, जजबाती बातों से दूर रहें, हालात पर तुरन्त प्रतिक्रया देने से बचें, किसी किसी मौक़े पर खामूशी और सब्र करने से अच्छा परिणाम निकलता है, शर्त यह है कि हमारा ईमान मजबूत हो और काम निस्वार्थता से किया जाये, इससे निराशा आशा में बदल जाती है।

परेशानी और आजमाइश नेमत और सुगम वातावरण में बदल जाती है। यह सब उसी वक़्त संभव है जब हम लोग नुकसान पहुचांने के बजाये भायदा पहुंचाने की कोशिश करें, और एक दूसरे के दुख दर्द को अपना दुख दर्द समझें, नेकी और भलाई के कामों में एक दूसरे का सहयोग करें और हर हाल में मदद की उम्मीद अल्लाह से रखें।

ईमान (आस्था) का प्रशिक्षण

डा० मुक्तदा हसन अज़हरी रह०

एक मुसलमान की सबसे बड़ी सम्पत्ति उसका ईमान (आस्था) है। इसी ईमान के कारण ही वह मुसलमान कहलाने का पात्र है तथा ईमान पर ही उसकी मुक्ति निर्भर है। अतः आवश्यक है कि बच्चे को प्रारम्भ से ही ईमान के नियम तथा शरीअत के स्तम्भों से परिचित कराया जाए।

जब बच्चा समझदार हो जाये तो उसे आस्था के नियमों की शिक्षा दी जाये तथा उसे बताया जाये कि मुसलमान होने के लिये अल्लाह तआला के अस्तित्व एवं उसकी विशेषताओं पर, रसूलों पर, फरिश्तों पर, आसमानी किताबों पर, कब्र के दण्ड पर, मरने के बाद पुनः जीवित होने पर, न्याय दिवस पर स्वर्ग तथा नरक पर, इसी प्रकार छिपी हुई अन्य वस्तुओं पर आस्था (विश्वास) रखना आवश्यक है।

इसी तरह उसे इस्लामी स्तम्भों में से नमाज़, रोज़ा, ज़कात तथा हज की शिक्षा दी जाये तथा साथ ही साथ शरीअत के व्यवहारिक तथा चारित्रिक आदेशों एवं नियमों की जानकारी दी जाये। हाकिम के एक कथन में है कि बच्चों को सर्वप्रथम लाइलाहाइल्लल्लाह (ईश्वर एक है) सिखाओ क्योंकि तौहीद (एकेश्वरवाद) का इस्लाम में अति महत्व है, तथा इसके बिना उपासना का महत्व नहीं, और न ही अल्लाह के यहां उसके व्यवहार का कोई मूल्य है।

इसके पश्चात बच्चों को हलाल -हराम (वैध-अवैध) की शिक्षा देनी चाहिए तथा अल्लाह तआला के बताए हुए मार्ग के अनुपालन का सुझाव देना चाहिए ताकि बच्चों को धार्मिक आदेशों की जानकारी हो तथा उसी के अनुसार जीवन व्यतीत करने की आदत डालें।

सात वर्ष की उम्र में बच्चे को नमाज़ का आदेश दिया जाये, यदि १० वर्ष की उम्र में नमाज़ न पढ़ें तो मारकर पढ़ाया जाये तथा उनका बिस्तर अलग कर दिया जाये।

प्रारम्भ से ही बच्चों को नबी सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम, उनके परिवार वालों तथा सहाबा किराम से प्रेम, लगाव एवं उनके सम्मान का पाठ पढ़ाना तथा कुरआन पढ़ने का पाबन्द बनाना चाहिए। इस्लामी इतिहास में भी उनकी रूचि उत्पन्न करना आवश्यक है कि उन्हें अनुमान हो सके कि किस प्रकार दीन धर्म उन तक पहुँचा तथा दूसरों तक पहुँचाने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए। बच्चों के जीवन में कुरआन करीम का पढ़ना तथा याद करना एवं व्यवहार, शिष्टाचार के उपदेश के महत्व पर सभी मुस्लिम प्रशिक्षण विशेषज्ञों ने बल दिया है।

इस्लाम की व्याख्या से यह मालूम होता है कि प्रत्येक बच्चा स्वभाविक रूप से ईमान तथा एकेश्वरवाद सफाई एवं पवित्रता पर जन्म लेता है परन्तु जन्मोपरान्त घर तथा वातावरण से प्रभावित होकर कुमार्ग पर चलने लगता है।

बच्चे के जीवन में समाज तथा वातावरण के प्रभाव के इस महत्व के उपरान्त उन माता पिता को गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए जो अपने बच्चों को इस्लाम की

बुनियादी शिक्षा से पहले अन्य विद्यालयों में भेज देते हैं।

इस प्रकार माता पिता को चाहिए कि वह अपने बच्चों को नास्तिक तथा अश्लील पुस्तकों तथा इस्लाम विरोधी दृष्टिकोण एवं आन्दोलनों से सुरक्षित रखें ताकि उनका ईमान बचा रहे तथा उनके हृदय में धर्म का सम्मान एवं प्रेम स्थापित रहे।

नैतिक प्रशिक्षण

इस विषय से अभिप्राय वह सभी अच्छे कार्य हैं जिसका मनुष्य के चरित्र तथा व्यवहार से सम्बन्ध है तथा जिसका आदेश दिया गया है। चरित्र का इस्लाम में अत्याधिक महत्व है तथा मानव समाज का सुधार एवं हित, चरित्र पर ही निर्भर है। इसी शक्ति से मनुष्य एक दूसरे को प्रभावित करता है तथा जीवन को सुखमय बनाता है।

यदि मनुष्य के हृदय में ईमान की रोशनी तथा ईश्वर का भय है तो अवश्य ही उसका कार्य अच्छा और व्यवहार एवं चरित्र श्रेष्ठ होगा। चरित्र के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए इस्लाम ने चिरत्र के प्रशिक्षण पर अधिक बल दिाय है तथा दया एवं दान का सुझाव दिया है।

तिर्मिज़ी की एक हदीस में नबी सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम का कथन है कि एक पिता का अपने पुत्र के लिए सबसे उत्तम उपहार, शिष्टाचार तथा अच्छा चरित्र एवं अच्छा व्यवहार है। नैतिक प्रशिक्षण के विषय में माता-पिता तथा अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। शरीअत (ध र्म) की शिक्षाओं से मालूम होता है कि सन्तान के विषय में माता पिता तथा अभिभावकों को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

प्रारम्भ से ही बच्चों को सच्चाई, त्याग, बलिदान, दृढ़ता, बड़ों का सम्मान तथा दूसरों के साथ दया एवं कृपा भाव तथा कुशल व्यवहार का साधक बनाना चाहिए तथा सभी उन अच्छे कार्यों के करने का सुझाव दिया जाये जिससे दूसरों को सुख सुविधा प्राप्त हो।

इसी प्रकार बच्चों को निम्नलिखित चारित्रिक दोषों से दूर रखने का भरपूर प्रयास किया जाये।

झूठ : मुनष्य के स्वभाव के विपरीत तथा अत्याधिक बुरी आदत झूठ बोलना है। शरीअत ने इस सम्बन्ध में कड़ी चेतावनी दी है। झूठ एक प्रकार से झगड़े की जड़ है तथा इसकी गणना झगड़े की आदतों में की जाती है। झूठे व्यक्ति के विषय में हदीस में वर्णित है कि अल्लाह तआला कयामत (प्रलय) के दिन झूठे व्यक्ति से न तो बात करेगा न उसे मुक्ति प्रदान करेगा और न ही उसकी ओर देखेगा झूटे को बड़ी भयंकर यातना दी जायेगी।

सन्तान को इस बुरी आदत अर्थात झूठ के अति भयावह परिणामों से भली भांति सचेत कर देना चाहिए तथा उससे होने वाली हानियों की सविस्तार व्याख्या कर देनी चाहिए। इसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि माता पिता तथा अभिभावक बच्चों से झूठ न बोलें ताकि उनकी सन्तान झूठ से दूर रहे।

चोरीः चोरी करना अत्याधिक बुरी आदतों में से एक है तथा अच्छे चरित्र के विपरीत कार्य है। इससे मनुष्य में अन्य चारित्रिक दोष उत्पन्न होते हैं तथा इससे समाज को हानि उठाना पड़ता है। चोरी की बुरी आदतों से सन्तान को बचाना तथा दूर रखना अतिआवश्यक है। उनके दिल में अल्लाह का भय उत्पन्न किया जाये, तथा मनुष्य की सम्पत्ति एवं धन दौलत का आदर स्पष्ट किया जाये और चोरी के भयंकर परिणामों को बता कर बच्चों के मन में चोरी से घृणा उत्पन्न की जाये।

कुरआन के अल्लाह की ग्रन्थ होने की दलील

डा० बाबुल आलम

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

१. ''हमने जो कुछ अपने बन्दे पर उतारा है उसमें अगर तुम्हें शक हो और तुम सच्चे हो तो इस जैसी एक सूरे तो बना लाओ, तुम्हें अधिकार है कि अल्लाह के सिवा और अपने सहायकों (मददगारों) को बुला लो''। (सूरे बकरा-२३)

कुरआन की इस आयत में अल्लाह ने कहा कि हमने अपने बन्दे पर जो किताब अवतरित (उतारी) है उसके अगर अल्लाह के ग्रन्थ होने पर तुम्हें शक (सन्देह) है तो अपने तमाम समर्थकों को साथ मिला कर इस जैसी एक ही सूरत बना कर दिखा दो और अगर ऐसा नहीं कर सकते तो समझ लेना चाहिये कि वास्तव में यह किसी इन्सान की मेहनत का परिणाम नहीं है बल्कि अल्लाह की वाणी (कलाम) है और अल्लाह पर और उसके सन्देष्टा मुहम्मद स० पर ईमान लाकर जहन्नम की आग से बचने का प्रयास करना चाहिये जो कि कुकर्मियों के लिये तैयार की गयी है।

कुरआन की सच्चाई की एक स्पष्ट दलील है कि अरब और गैर अरब के तमाम लोगों को चुनौती दी गयी लेकिन आज तक वह इसका जवाब देने में असमर्थ हैं और निश्यय ही क्यामत तक इसमें असमर्थ रहेंगे।

कुरआन में अल्लाह तआला कहता है

२. यह परोक्ष (गैब) की खबरों में से है जिसे हम तेरी तरफ वह्य पैगम्बर के लिये ईश्वरीय सन्देश) से पहुँचाते हैं तू उनके पास नहीं था जबकि वह अपने कलम डाल रहे थे कि मरयम को उनमें से कौन पालेगा और न तू उनके झगड़ने के वक़्त उनके पास था'' (सूरे आल इमरान-४४)

आज कल कुछ लोगों ने हज़रत मुहम्मद स०अ०व० को अल्लाह की तरह परोक्ष का ज्ञान रखने और हर जगह हाजिर नाजिर (मौजूद रहने और हर चीज़ देखने) का अकीदा गढ़ रखा है कुरआन की इस आयत से दोनों अकीदों का स्पष्ट खण्डन होता है अगर आप परोक्ष का ज्ञान रखने वाले होते तो अल्लाह तआला यह नहीं फरमाता कि हम परोक्ष की खबरें आप को बता रहे हैं क्योंकि जिसको पहले ही से ज्ञान हो उसको इस प्रकार संबोधित नहीं किया जाता और इसी प्रकार हाज़िर व नाज़िर को यह नहीं कहा जाता कि आप उस वक़्त वहां मौजूद नहीं थे जब लोग कुरआ अन्दाज़ी के लिये कलम डाल रहे थे। कुरआ अन्दाज़ी की ज़रूरत इस लिये पेश आयी कि हज़रत मरयम की किफालत के और भी कई लोग इच्छुक थे इस आयत ''यह गैब (परोक्ष) की खबरों में से है जिसे हम तेरी तरफ वह्य से पहुंचाते हैं'' से हज़रत मुहम्मद स०अ०व० की पैगम्बरी और आप की सच्चाई का सुबूत है जिस में यहूदी और ईसाई शक करते हैं क्योंकि वह्य पैगम्बर पर ही आती है गैर पैगम्बर पर नहीं।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है

३. ''क्या लोग कुरआन में गौर नहीं करते कि यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ से होता तो यकीनन (निश्चित रूप) से इसमें बहुत कुछ इखतेलाफ पाते''। (सूरे निसा-८२)

कुरआन से मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिये उसमें चिन्तन करने पर बल दिया जा रहा है और इसकी हकीकत जानने के लिये एक कसौटी बताया गया है कि अगर यह किसी इन्सान की बनायी हुयी वाणी होती जैसे कि कुफ्फार का ख्याल है तो इसके लेख और इसमें बयान किये गये वाक्यात में विरोधाभास होता क्योंकि यह कोई छोटी सी किताब नहीं एक विस्तृत किताब है जिसका हर भाग चमत्कार और वाग्मिकता में प्रमुख है जबकि इन्सान की लिखी हुयी किताब में भाषा का स्तर और उसकी वाग्मिता और फसाहत (भाषा की सरलता) बाकी नहीं रहती। दूसरी बात यह है कि इसमें पिछली कौमों के वाक्आत बयान किये गये हैं जिन्हें परोक्ष का ज्ञान रखने वाला अल्लाह के सिवा कोई और बयान नहीं कर सकता। इन वाक्आत और घटनाओं में किसी प्रकार का मतभेद और विरोधाभास नहीं है और न कोई छोटे से छोटा भाग कुरआन की किसी असल से टकराता है जबकि एक इन्सान पिछले वाक्आत बयान करे तो श्रंखलबद्धता निरन्तरता अर्थात तसलसुल की कड़ियां टूट जाती हैं और उनके विवरण में विरोधाभास हो जाता है कुरआन के इन तमाम इन्सानी कोताहियों से पवित्र होने का स्पष्ट अर्थ यह है कि कुरआन निश्चिय तौर पर अल्लाह का कलाम (वाणी) है जिसको अल्लाह ने फरिश्ते के द्वारा अपने अन्तिम सन्देष्टा पैगम्बर हज़रत मुहम्मद पर अवतरित किया है।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है

४. ''और यह कुरआन इफ्तेरा (घढ़ा हुआ) नहीं है कि गैर अल्लाह से आया हुआ हो बल्कि यह कुरआन उन किताबों की पुष्टि करने वाला है जो इससे पहले अवतरित हो चुकी हैं और ज़रूरी अहकाम (आवश्यक आदेश) का विवरण बयान करने वाला है इसमें कोई शक की बात नहीं है, रब्बुल आलमीन (सम्स्त संसार के पालनहार) की तरफ से है क्या यह लोग यूं कहते हैं कि आप (मुहम्मद) ने इसको इफ्तेरा (गढ़) लिया है, आप कह दीजिए तो फिर तुम इसके समान एक ही सूरत लाओ और जिन गैर अल्लाह को बुला सको सबको बुला लो अगर तुम सच्चे हो''। (सूरे यूनुस ३७-३८)

इन तमाम यथार्थ और तर्क के बाद भी अगर तुम्हारा दावा यही है कि यह कुरआन मुहम्मद स०अ०व० का गढ़ा हुआ है तो वह भी तुम्हारी ही तरह एक इन्सान हैं तुम्हारी भाषा भी उन ही की तरह अरबी है वह तो अकेले हैं तुम अगर अपने दावे में सच्चे हो तो तुम दुनिया भर के साहित्यकारों भाषाविदों, ज्ञानियों और लेखकों को जमा कर लो और इस कुरआन की एक छोटी सी छोटी सूरत के समान बना कर पेश करो। कुरआन का यह चैलेंज आज तक कोई पूरे नहीं कर सका जिस का स्पष्ट अर्थ यह है कि यह कुरआन किसी इन्सान की मेहनत का परिणाम नहीं है बल्कि वास्तव में यह अल्लाह की वाणी है जो अल्लाह के सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद स० पर अवतरित हुआ।

कुरआन कहता हैः ५. ''क्या यह कहते हैं कि इस कुरआन को इसी ने गढ़ लिया है जवाब दीजिये कि फिर तुम भी इसी के समान दस

सूरतें गढ़ी हुयी ले आओ और अलाह के सिवा जिसे चाहो अपने साथ बुला भी लो अगर तुम सच्चे हो। फिर अगर तुम्हारी इस बात को कुबूल कर लें तो यकीन से जान लो कि यह कुरआन अल्लाह के इल्म के साथ उतारा गया है और यह कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य (माअबूद) नहीं है पस क्या तुम ईमान लाते हो'' (सूरे हूद १३-१४)

पहली आयत में अल्लाह ने चैलेंज दिया है कि अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो कि यह मुहम्मद स०अव० का बनाया हुआ कुरआन है तो इसके जैसा बना कर दिखला दो और तुम जिसकी चाहो मदद हासिल कर लो लेकिन तुम कभी ऐसा नहीं कर सकोगे। इसके बाद अल्लाह ने यह चैलेंज दिया कि पूरा कुरआन बना कर पेश नहीं कर सकते तो दस सूरतें ही बना कर पेश कर दो। फिर तीसरे नंबर पर चैलेंज दिया कि चलो एक ही सूरत बनाकर पेश करो जैसा कि सूरे यूनुस की आयत नंबर १३९ और सूरे बकरा के शुरू में फरमाया दूसरी आयत में अल्लाह तआला फरमाता है कि इसके बाद भी तुम इस चैलेंज का जवाब देने से असमर्थ हो, यह मानने के लिये कि यह कुरआन अल्लाह ही का उतारा हुआ है, तैयार नहीं हो और न ईमान लाने के लिये तैयार हो

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है

६. ''यह गैब (परोक्ष) की खबरों में से है जिसकी हम आप की तरफ वह्य कर रहे हैं तो आप उनके पास नहीं थे जब उन्होंने अपनी बात ठान ली थी और वह फरेब करने लगे थे''। (सूरे यूसुफ-१०२)

कहने का मतलब यह है कि युसुफ के साथ जब उन्हें कुवें में फैंक आये या यहां हज़रत याकूब मुराद (अभिप्राय) हैं अर्थात उनको यह कह कर कि युसुफ को भेड़िया खा गया है और यह उसकी कमीस है जो खून में लतपत है उनके साथ फरेब (धोका) किया गया अल्लाह ने इस स्थान पर भी इस बात का रदद किया है कि आप को परोक्ष का ज्ञान था लेकिन यह रदद केवल ज्ञान की नहीं है क्योंकि अल्लाह ने वह्य के द्वारा आप को बताया था यह रदद पर्यवेक्षण (मुशाहेदा) की है कि उस वक्त आप वहां मौजूद नहीं थे, इसी तरह ऐसे लोगों से भी आप का संपर्क नहीं रहा जिनसे आप (मुहम्मद) ने सुना हो यह केवल अल्लाह ही है जिसने आप को इस परोक्ष घटना की खबर दी है जो इस बात की दलील है कि आप अल्लाह के सच्चे नबी (मैसेन्जर) हैं और अल्लाह तआला की तरफ से आप पर वह्य नाज़िल होती है। अल्लाह तआला ने और भी कई स्थानों पर इसी प्रकार परोक्ष-ज्ञान और पर्थवेक्षण (मुशाहेदा) का रदद किया है।

कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है: ७. ''ऐलान कर दीजिए कि अगर तमाम इन्सान और सब जिन्नात मिल कर इस कुरआन के समान लाना चाहें तो इन सबसे इसके समान लाना असंभव है चाहे वह आपस में एक दूसरे के सहायक भी बन जायें''। (सूरे इस्राईल-८८)

कुरआन में यह चैलेंज बार बार दिया गया है इस चैलेंज का जवाब आज तक कोई नहीं दे सका इस कुरआन की यह महिमा है कि तमाम सृष्टि इसके मुकाबले से असमर्थ है किसी के बस में इस जैसी वाणी (कलाम) नहीं है जिस प्रकार अल्लाह अद्वितीय और अनुपम है इसी प्रकार उसकी वाणी भी।

इस्लाम

प्रो० डा० मुहम्मद ज़ियाउर्रहमान आज़मी

इस्लाम का अर्थ है शान्ति। अतः इस्लाम धर्म का अर्थ हुआ- शान्ति प्रदान करने वाला धर्म। इसी से 'सिल्म' बना है। कुरआन में आया है कि

''यदि वे लोग शान्ति की ओर झुकें तो तुम भी उनकी ओर झुक जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो। निस्संदेह वह सुनने वाला और जानने वाला है।'' (सूरा-८, अल-अनफ़ाल, आयत-६१)

अर्थात् अगर युद्ध हो रहा हो और शत्रु शान्ति-संधि का सन्देश भेजे तो भी शान्ति स्वीकार करनी चाहिए। इस प्रकार इस्लाम स्वीकार करने का अर्थ है अपने आपको अल्लाह के आदेश के सामने झुका देना।

''यदि उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया तो उन्होंने मार्ग पा लिया और यदि वे इससे मुंह मोड़ें तो तुम पर केवल (सन्देश) पहुंचा देने की ज़िमेदारी है और अललाह अपने बन्दों को देखने वाला है।'' (कुरआन, सूरा-३, आले-इमरान, आयत-२०)

फिर यह कोई नया धर्म नहीं है, बल्कि यह तो सारे नबियों का ध र्म रहा है।

''निस्संदेह हमने तौरात उतारी, जिसमें मार्गदर्शन तथा प्रकाश है। इस्लाम लाने वाले नबी यहदियों, ध र्माधिकारियों तथा धर्म ज्ञानी लोगों के बीच उसी के अनुसार न्याय किया करते थे।'' (कुरआन, सूरा-५, अल-माइदा, आयत-४४)

''इबराहीम न यहूदी था और न ईसाई, बल्कि वह तो सबसे कटकर रहने वाला मुस्लिम था और वह मुशरिकों में से नहीं था।'' (कुरआन, सूरा-३, आले-इमरा, आयत-६७)

हज़रत यूसुफ ने अल्लाह से यह प्रार्थना की

आकाशों और धरती को पैदा करने वाले! तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा संरक्षक मित्र हैं मुझे इस दशा में उठा कि मैं मुस्लिम (आज्ञाकारी) हूं और मुझे अच्छे लोगों के साथ मिला। (कुरआन, सूरा-१२, यूसुफ, आयत-१०१)

जबकि मैंने हवारियों (ईसा के अनुयाइयों) के दिल में डाला कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ, उन्होंने कहा, हम ईमान लाए, गवाह रहो कि हम मुस्लिम हैं।'' (कुरआन, सूरा-५, अल-३इदा, आयत-१११)

सुलैमान ने कहा, ''ऐ सरदारो, तुम में कौन उसका (सबा की रानी) का सिंहासन मेरे पास उसके मुस्लिम होने से पहले लेकर आता है। (कुरआन, सूरा-२७, अन-नम्ल, आयत-३८)

इन आयतों से पता चलता है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो धर्म लेकर आए, जिसको इस्लाम कहते हैं, सभी नबियों का धर्म है। यह कोई नया धर्म नहीं है।

कह दो, मैं कोई नया रसूल नहीं हूं और न मैं यह जानता हूं कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा? मैं तो बस उसी पर चलता हूं जो मेरी ओर वह्य की जाती है, और मैं तो बस एक साफ़-साफ़ सचेत करने वाला हूं। (कुरआन, सूरा-४६, अल-अहक़ाफ, आयत-६) इसलिए अल्लाह के निकट धर्म तो केवल इस्लाम है। (कुरआन, सूरा-३, आले-इमरान, आयत-१६)

जो इस्लाम से हटकर कोई और धर्म चाहेगा तो उसे कभी स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह आख़िरत में हानि उठाने वाला होगा। (कुरआन,

सूरा-३, आले-इमरान, आयत-८५)

इस प्रकार देखा जाए तो पता चलता है कि इस्लाम वह धर्म है, जिसको अल्लाह ने अपने अन्तिम रसूल और नबी मुहम्मद स० पर उतारा और इसके द्वारा उसने दूतत्व के सिलसिले को सदैव के लिए समाप्त कर दिया। अब इस्लाम ही वह धर्म है जिसके अतिरिक्त अल्लाह किसी और धर्म को स्वीकार नहीं करेगा। इस धर्म को उसने बड़ा सरल बनाया है। इसमें किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं है। उसने इसको ग्रहण करने वालों पर कोई ऐसा बोझ नहीं डाला, जिसकी वे शक्ति न रखते हों। इस धर्म का आधार तौहीद (एकेश्वरवाद) है। इसकी पहचान सत्यता है, न्याय इसका प्रमुख अंग है और इसका निचोड़ एक-दूसरे पर दया करना है। यह ऐसा धर्म है जो हर लाभदायक और भले कामों का आदेश देता है और हानिकारक तथा बुरे कर्मों को वर्जित करता है। यह एक ऐसा धर्म है जिसके द्वारा अल्लाह अपने बन्दों के विश्वास तथा आचरण को ठीक करता है और सांसारिक तथा पारलौकिक जीवन को संवारता है। इसके द्वारा अल्लाह टूटे हृदयों को जोड़ता है तथा इनसानों को सत्य मार्ग दिखाता है। यह एक ऐसा धर्म है जिसमें सारे आदेश स्पष्ट हैं। चाहे वे विश्वास सम्बन्धी हों या कर्म व आचार सम्बन्धी हों या व्यवहार सम्बन्धी।

अर्थात इस्लाम का सारा रूप यह है

१. मनुष्यों को अपने रब (पालन-कर्ता) तथा स्रष्टा के नामों, गुणों तथा कर्मों से परिचित कराना।

२. बन्दों को केवल अल्लाह की उपासना का निमंत्रण देना और यह स्पष्ट करना कि उसका कोई साझी नहीं उसके बताए हुए कर्मों को ग्रहण करना और जिन कर्मों से उसने रोका हो, उनसे रूक जाना।

३. मृत्यु के पश्चात आने वाले जीवन के बारे में बताना और यह बताना कि प्रलय दिवस को उनके साथ क्या होने वाला है तथा उठाए जाने के पश्चात प्रलय दिवस में उनका स्थान क्या होगा, स्वर्ग होगा या नरक?

संक्षेप में इस्लाम के आधार-स्तंभ का वर्णन किया जा रहा है।

१. ईमान अर्थात विश्वास

इसके छह भाग हैं:

१. अल्लाह पर ईमान

अल्लाह पर विश्वास का अर्थ है-

क. अल्लाह सबका रब (पालनकर्ता) है अर्थात वही रब है, वही सृष्टि का रचयिता है, वही हमारा स्वामी है, वही सारे ब्रहमांड को चला रहा है, वही सर्वाधिकारी है।

ख. केवल वही उपासना के योग्य है। उसको छोड़कर जिनकी भी पूजा की जाती है वे सब मिथ्या है।

ग. उसके सभी नाम श्रेष्ठ तथा उत्तम हैं। वह उन सारे गुणों से सम्पन्न है जिसका विवरण कुरआन और हदीस में आया है। इस्लाम ने जहां एकेश्वरवाद का संदेश दिया है, वहीं अनेकेश्वरवाद की घोर निन्दा की है। और वे लोग जो एक अल्लाह को छोड़कर किसी और की उपासना करते हैं उनको नरक की यातना की सूचना दी है।

निश्चय ही उन लोगों ने कुफ्र किया, जिन्होंने कहा, ''मरयम का पुत्र मसीह ही अल्लाह है'' जबकि मसीह ने (स्वयं) कहा था, ''ऐ इसराईल की सन्तान, उस अल्लाह की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा रब है। क्योंकि जो अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराएगा अल्लाह ने उस पर स्वर्ग को हराम (निषिद्ध) कर दिया है और उसका ठिकाना नरक (जहन्नम) है। और अत्याचारियों (शिर्क करने वालों) का कोई सहायक नहीं होगा। (कुरआन, सूरा-५, अल-माइदा, आयत-७२)

इसलिए इस्लाम का प्रथम स्तंभ

तौहीद (एकेश्वरवाद) है।

इस्लाम का दूसरा स्तंभ सलात है, जिसको हम नमाज़ कहते हैं। नमाज़ वास्तव में इसी तौहीद को बार-बार याद दिलाती है और चेतावनी देती है कि सावधान, जीवन के किसी क्षण में तौहीद को छोड़कर शिर्क न कर बैठना, क्योंकि शैतान हमारे पीछे उसी समय से लगा हुआ है जबसे उसको तथा आदम को जन्नत से निकाला गया था। कुरआन में है-

कहो ''निकल जा यहां (स्वर्ग) से, निश्चय ही तू धुतकारा हुआ है। और निश्चय ही तुझ पर बदला दिलए जाने के दिन (प्रलय) तक मेरी ओर से फटकार है।'' कहने लगा, ''मेरे रब, मुझे उस दिन तक अवसर प्रदान कर जिस दिन लोग पुनः उठाए जाएंगे। कहा, ''जा तुझे अवसर दिया जाता है। उस दिन तक के लिए जिसका समय निश्चित है।'' उसने कहा, ''मेरे रब, जैसा तूने मुझे भटकाया है उसी तरह मैं भी उनके लिए धरती में मनोहरता का आयोजन करके उन सबको भटकाऊंगा। सिवाए उनके जो तेरे चुने हुए बन्दे होंगे।'' (सूरा-१५, अल-हिज्र, आयतें ३४-४०)

इसका प्रमाण प्रस्तुत करने के बाद उस पर आवश्यक हो जाएगा कि वह हर प्रकार की उपासनाएं केवल अल्लाह के लिए विषिष्ट कर ले, जैसे प्रार्थना, सहायता, चिन्तन, समाधि, आसन इत्यादि। और इनमें किसी को साझी न ठहराए, चाहे वे फ़रिश्ते हों या पवित्र आत्माएं, मनुष्य के भेस में हों या किसी और भेस में-

प्रभुवर, हम तेरी ही बन्दगी करते हैं, और तुझी से सहायता चाहते हैं। कुरआन, सूरा-१, अल-फ़ातिहा, आयत-४

कह दो कि अल्लाह के अतिरिक्त जिनको भी तुम कार्यसाध ाक समझ बैठे हो उन्हें पुकार कर देखो, वे न तुमसे कोई कष्ट दूर करने का अधिकार रखते हैं और न उसे बदलने का (कुरआन, सूरा-१७, अल-इसरा, आयत-५६)

११. फरिश्तों पर ईमान

यह ईश्वर की वह मख़लूक़ (सृष्टि) है जिसको उसने केवल अपनी उपासना के लिए ही पैदा किया है। ये फ़रिश्ते हर समय उसकी उपासना करते रहते हैं। उसकी आज्ञा का पालन करते रहते हैं। अल्लाह ने उनको विभिन्न कामों पर लगाया है, जैसे-

अल्लाह ने नबियों तक अपना संदेश पहुंचाने के काम पर जिबरील को लगाया। वर्षा बरसाने का काम मीकाईल को दिया गया है। इसराफील को क़ियामत के दिन सूर (नरसिंघा) फूंकने का काम सौंपा गया है। एक मृत्यु के फ़रिश्ते हैं, जिनको मौत के समय रूह निकालने पर लगाया गया है। कुछ लोग इनका नाम इज़राईल बताते हैं, जिसकी पुष्टि कुरआन तथा सहीह हदीसों से नहीं होती। अर्थात ये फ़रिश्ते अल्लाह के बताए हुए कामों पर लगे हुए हैं। उनमें से किसी को कोई और अधिकार नहीं है। अल्लाह की भेजी हुई पुस्तकों पर ईमान

अल्लाह ने सम्पूर्ण मानव जाति के मार्गदर्शन के लिए अपने नबियों पर पुस्तकें उतारी हैं, उनमें से अन्तिम पुस्तक कुरआन है, जो क़ियामत तक के इनसानों के लिए मार्गदर्शन है। जो पुस्तकें कुरआन से पहले अवतरित हुई उनमें से कुछ का विवरण कुरआन में मिलता है, ये हैं-

तौरात, जो मूसा पर उतारी। इस पुस्तक में इसराईल की संतान का मार्ग दर्शन किया गया था।

इंजील, जो ईसा पर उतरी।

जबूर, दाऊद को दी गई।

इबराहीम के सहीफ़े।

नबियों पर ईमान

अल्लाह ने संसार में बहुत से नबी भेजे। सबसे पहले नबी आदम

थे और अन्तिम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ये नबी हमारी तरह मख़लूक सृष्टि प्राणी पैदा किए गए थे, उनमें से किसी प्रकार का सृष्टा गुण नहीं पाया जाता था, वे सब अल्लाह के सदाचारी बन्दे थे। अल्लाह ने उनको अपना नबी बनाकर उन पर बड़ा उपकार किया था। अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पश्चात इस श्रृंखला का अन्त कर दिया गया। अब क़ियामत तक कोई नबी नहीं आएगा, इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का लाया हुआ इस्लाम धर्म सारे मनुष्यों के लिए है।

प्रलय दिवस पर ईमान

प्रलय-दिवस पर ईमान का अर्थ है कि एक दिन यह दुनिया समाप्त हो जाएगी, फिर ईश्वर सारे इनसानों को उठाएगा और लोगों के कर्मों के अनुसार न्यायपूर्वक फ़ैसला करेगा। तत्पश्चात स्वर्ग या नरक में भेज देगा। सत्कर्मी के लिए स्वर्ग और दुष्कर्मी के लिए सदैव के लिए नरक होगा।

भाग्य पर ईमान

जिसका अर्थ है कि अल्लाह ने इस संसार को ज्ञान के द्वारा पैदा किया। इसलिए यहां जो कुछ भी हो रहा है उसको इसका ज्ञान है। वह सब कुछ उसके पास लिखा हुआ है यहां जो कुछ हो रहा है उसी की इच्छा से हो रहा है।

द्वितीयः इस्लाम के स्तंभ

इस्लाम के कुल पांच स्तंभ हैं, जिनको अपनाए बिना कोई व्यक्ति सच्चा मुसलमान नहीं बन सकता, और वे ये हैं।

१. कलिमा शहादतः ला-इला-ह इल्लल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह अर्थात इस बात की गवाही देना कि अल्लाह ही हमारा पालनकर्ता है इसलिए केवल वही उपासना के योग्य है। उसके अतिरिक्त जिसकी भी पूजा की जाए असत्य है। और मुहम्मदुर-रसूलुल्लाह का अर्थ है कि हम मुहम्मद स० की बताई हुई बातों पर विश्वास करें। जिसका उन्होंने आदेश दिया है उसका पालन करें और जिससे उन्होंने रोका है उससे रूक जाएं और अल्लाह की उपासना का वही नियम अपनाएं जिसका उन्होंने आदेश दिया है।

२. सलात (नमाज़) अल्लाह ने हम पर अनगिनत उपकार किए हैं। इन उपकारों के बदले अल्लाह का हम पर हक़ है कि हम उसकी उपासना करें। अल्लाह ने हम पर यह भी उपकार किया है कि अपनी पूजा और उपासना का तरीक़ा भी अपने नबी के द्वारा बता दिया है। अल्लाह का आदेश है

नमाज़, ईमान लाने वालों पर वक़्त की पाबन्दी के साथ फ़र्ज़ कर दी गई है। (कुरआन, सूरा-४, अन-निसा, आयत-१०३)

इस प्रकार दिन में पाँच बार नमाज़ अदा करना हमारे ऊपर अनिवार्य है, क्योंकि यह अल्लाह का आदेश है। नमाज़ अल्लाह और बन्दे के सम्बन्ध को आपस में जोड़ने का उत्तम साधन है। क्योंकि इसके द्वारा बन्दा अल्लाह को पुकारता है, उससे मुनाजात (प्रार्थना एवं दुआ) करता है। जब एक मुसलमान नमाज़ इस प्रकार अदा करेगा तो नमाज़ उसको हर प्रकार की बुराईयों से रोकेगी। इसलिए चौबीस घंटों (दिन-रात) में पांच बार नमाज़ पढ़ना अनिवार्य किया गया। सहीह हदीसों में आया है कि नमाज़ न पढ़ने वाला कुफ्र करने का दोषी हो जाएगा।

एक दूसरी हदीस में आया है कि इस्लाम और कुफ्र के बीच जो अन्तर है, वह नमाज़ है।

१. ज़कातः यह एक प्रकार का धार्मिक दान है जो हर उस मुसलमान पर प्रत्येक वर्ष अदा करना अनिवार्य है जिस पर 'ज़कात' फ़र्ज़ हो जाए। ज़कात को ज़रूरतमन्द लोगों और उन मदों में ख़र्च किया जाता है जिनका उल्लेख कुरआन में हुआ है

इस प्रकार धनवान अपने धन को शुद्ध करते हैं। उनमें मुहताजों और ज़रूरतमन्दों के लिए सहानुभूति पैदा होती है और मुस्लिम समाज के सारे व्यक्ति आपस में भाई-भाई दिखाई देने लगते हैं। न तो धनवाले दरिद्रों से घृणा करते हैं, न दरिद्र धनवालों से ईर्ष्या।

एक सहीह हदीस में आया है, ''ज़कात धन वालों से लिया जाएगा और निर्धनों में बांट दिया जाएगा।'' सोने और चांदी में २.५ तथा अनाज में जिसको वर्षा द्वारा उगाया गया हो १० और जिसको सिंचाई से उगाया गया हो उसमें ५ ज़कात निकालने का आदेश है।

२. रोज़ाः इस्लाम का चौथा स्तंभ रोज़ा (व्रत) है, जिसको अरबी में सौम कहते हैं। रमज़ान के महीने में एक माह के रोज़े प्रत्येंक मुसलमान स्त्री-पुरूष पर अनिवार्य हैं। यह रोज़ा भोर से आरम्भ होता है और सूर्यास्त होने तक रहता है। इस बीच हर प्रकार का खाना-पीना तथा सहवास करना वर्जित है। इसके द्वारा आत्मा की शुद्धि होती है तथा पाप दूर होते हैं। स्वर्ग में श्रेणी ऊंची होती है। इस रोज़े के और बहुत से लाभ हैं।

३. हज का अर्थ है वह धार्मिक यात्रा जो मक्का की ओर की जाती है। यह प्रत्येक उस मुसलमान (स्त्री-पुरूष) पर, जो मक्का की यात्रा कर सकता हो, जीवन में एक बार अनिवार्य है। जहां काबा का तवाफ और फिर अरफात की यात्रा की जाती है तथा प्रभात काल से सूर्यास्त तक उपासना की जाती है अर्थात सब मिलकर एक 'रब' की उपासना करते हैं, एक प्रकार का वस्त्र धारण करते हैं। वह एक ऐसा दृश्य होता है जहां धनवान तथा निर्धन, गोरे तथा काले सब एक समान होते हैं मिना में तीन दिन रूककर जमरात (जो कि शैतान का प्रतीक है) को कंकरी मारना सम्मिलित है।

तृतीयः इस्लाम की सामाजिक शिक्षाएं इस्लाम ने मनुष्य के व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन दोनों को एक विशेष व्यवस्था का पाबन्द बना दिया है जिसके द्वारा वह लोग तथा परलोक में सफलता पा सकता हैं निकाह (शादी-ब्याह) को जाइज़ (उचित) बताया, और ज़िना (व्यभिचार) को हराम (वर्जित) ठहराया। इसी प्रकार उसने हर बुराई से रोका और हर भलाई का आदेश दिया। इसके पश्चात भी अगर कोई बुराई से नहीं रूकता है, बल्कि दूसरों पर अत्याचार करता है तो उसके लिए कड़ा दंड निर्धारित किया। जैसे व्यभिचार करना, मद्यपान, यतीमों तथा कमज़ोरों पर जुल्म इत्यादि। इसी प्रकार किसी की हत्या करना, चोरी करना, किसी पर झूठा आरोप लगाना, किसी को बिना कारण मारना आदि पर भी इस्लाम कड़ा दंड निर्धारित करता है। फिर जो दंड उसने निर्धारित किए हैं वे अपराध या दोष के अनुकूल हैं। इसी प्रकार इस्लाम ने प्रजा तथा शासक के सम्बन्ध को भी प्रकट किया। प्रजा को आदेश दिया कि वह शासक की आज्ञा का पालन करें और उनके विरूद्ध कोई काम न करें (अगर उनका आदेश अल्लाह के आदेश के विपरीत नहीं है), क्योंकि शासक के विरूद्ध चलने से संसार में बिगाड़ पैदा होगा। हम संक्षेप में कह सकते हैं कि इस्लाम ने अल्लाह और बन्दे के सम्बन्ध को उचित रूप से उजागर किया है। इसी प्रकार मनुष्य का सम्बन्ध अपने समाज से उचित प्रकार से जोड़ा है। भलाई का कोई भी ऐसा काम नहीं है जिसका इस्लाम ने आदेश न दिया हो और कोई बुराई ऐसी नहीं है जिससे इस्लाम ने रोका न हो, और यही एक सत्य और पूर्ण धर्म की पहचान है। लेकिन क्या किया जाए बहुत सारे लोग इन बातों को नहीं जानते जिसके कारण वे इस्लाम पर नित्य नए-नए आरोप लगाते रहते हैं।

रमज़ान के रोज़े की अहमियत व फज़ीलत

डा० अमानुल्ला मदनी

अल्लाह तआला ने इन्सान और जिन्नात को सिर्फ अपनी इबादत के लिये पैदा किया है कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः ''मैंने जिन्नों और इन्सानों को केवल अपनी इबादत के लिये पैदा किया है'' (सूरे ज़ारियात-५६) इस लिये हर मुसलमान को चाहिए कि वह मरते दम तक अल्लाह की इबादत व बन्दगी में मश्गूल रहे।

रमज़ान का महीना खैर व बरकत के एतबार से तमाम महीनों में सबसे अफज़ल (श्रेष्ठतम) है इसलिये इस बरकत वाले महीने में ज़्यादा से ज़्यादा नेक आमाल करने चाहिएँ।

निम्न पंक्तियों में उन नेक कर्मों का उल्लेख किया जा रहा है जिन्हें रमज़ान के महीने में खूब पाबन्दी और लगन से करना चाहिए।

रमज़ान के महीने का रोज़ा हर आक़िल बालिग़ मर्द और औरत पर फर्ज़ है जैसा कि अल्लाह तआला ने सूरे बक़रा की आयत न १८३ में फरमाया है।

रोज़े की इतनी फज़ीलत है कि अल्लाह तआला इसका बदला खुद ही देता है। सहीह बुखारी की एक हदीस का सारांश है कि चूंकि रोज़ेदार सिर्फ अल्लाह के लिये खाना पीना छोड़ देता है इसलिये अल्लाह तआला रोज़ेदार को बगैर किसी माध्यम के स्वयं ही रोज़े का बदला देगा। (सहीह बुखारी ७४४२)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स ईमान और सवाब की उम्मीद और आशा से रोज़ा रखे गा अल्लाह तआला उसके तमाम गुनाहों को मआफ कर देगा। (सहीह बुखारी-३८)

क्यामुल्लैल (तरावीह) का एहतमाम करना अल्लाह के नजदीक बहुत ही प्रिय इबादत है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कयामुल्लैल का काफी एहतमाम करते थे। आप इतनी देर तक खड़े होकर इबादत करते थे कि इसकी वजह से आपके पैर में सूजन आ जाता था। सहीह बुखारी हदीस ४८३६ में है कि अल्लाह के रसूल पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इतनी देर तक क्याम करते थे कि आप के पैरों में वरम (सूजन) आ जाता था आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा गया कि अल्लाह तआला ने आपके पिछले और अगले तमाम गुनाहों को माफ कर दिया (फिर इतनी इबादत क्यों करते हैं) पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्या मैं अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं।

रमज़ान की इबादत के बारे में पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स रमज़ान के महीने में क़्याम (इबादत) करेगा अल्लाह तआला उसके पिछले तमाम गुनाहों को माफ कर देगा। (सहीह बुखारी-३७)

रमज़ान के महीने में तरावीह की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने का सवाब ज़्यादा मिलता है बल्कि प्रतिष्ठित एवं सुप्रसिद्ध ओलमा

तरावीह की नमाज़ को जमाअत के साथ पढ़ने को ही अफज़ल (ज़्यादा बेहतर और सवाब वाला) क़रार देते हैं लेकिन अकेले तरावीह की नमाज़ पढ़ने में कोई हर्ज नहीं है।

सदक़ा ख़ैरात एक महानतम इबादत है इसकी बड़ी अहमियत और फज़ीलत है लेकिन रमज़ान के महीने में ज़्यादा से ज़्यादा सदक़ा ख़ैरात करना चाहिए ''रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खैर के मामले में काफी दानवीर थे जब कि रमज़ान के महीने में तेज व तुन्द हवाओं के समान अल्लाह के रास्ते में दान व खैरात करते थे।'' (सहीह मुस्लिम-२३०८)

फर्ज़ ज़कात की अदायगी साल के किसी भी महीने में की जा सकती है लेकिन सलफ सालिहीन फर्ज़ ज़कात की अदायगी का एहतमाम रमज़ान में करते थे। साधारण सदक़ा खैरात की अदायगी कई तरह से की जा सकती है। गरीबों को खाना खिलाना भी सदक़ा खैरात में शामिल है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ऐ लोगो सलाम फैलाओ, खाना खिलाओ, रिश्तेनाते दारी को जोड़ो, और जब लोग सो रहे हों ऐसे वक़्त में रात को क़्याम (इबादत) करो जन्नत में जाओगे। (सुनन इब्ने माजा-३२५१ शैख अलबानी ने इस हदीस को हसन करार दिया है।

रोज़ेदार को इफतार कराने का बहुत सवाब है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया रोज़े रखने वालों को इफतार कराने का सवाब रोज़ा रखने के बराबर है और रोज़ेदार के सवाब में किसी भी प्रकार की कमी नहीं होगी। (सुनन तिर्मिजी-८०७ इस हदीस को शैख अलबानी ने सहीह क़रार दिया है। इस्लाम ने पवित्र कुरआन की तिलावत पर काफी ज़ोर दिया है। रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रमज़ान के महीने में कुरआन की तिलावत का खूब एहतमाम करते थे। जिबरील अलैहिस्सलाम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रमज़ान के महीने में पूरा कुरआन पढ़ाया करते थे और उस रमज़ान में जिस रमज़ान के बाद आप पर कोई रमज़ान नहीं आया जिबरईल अलैहिस्सलाम ने आप को दो बार कुरआन पढ़ाया था।

कुरआन की तिलावत की फज़ीलत बयान करते हुए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''जो कुरआन करीम के एक अक्षर की तिलावत करेगा उसे दस नेकी मिलेगी (सुनन तिर्मिज़ी २९१०, शैख अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है।)

कुरआन करीम की तिलावत के वक़्त चन्द बातों का पास व लिहाज (ध्यान) रखना चाहिए।

कुरआन की तिलावत ज़्यादा से ज़्यादा करनी चाहिए।

कुरआन की तिलावत के दौरान रोना।

कुरआन करीम को समझने की क्षमता प्राप्त करना

कुरआन की शिक्षाओं पर अमल करना कुरआन के अनुसार अपना अक़ीदा (आस्था) बनाना

एतक़ाफ का ज़िक्र कुरआन हदीस में मौजूद है। अल्लाह ने कुरआन में फरमायाः व अन्तुम आकिफूना फिल मसाजिद'' (सूरे बक़रा १८७१

रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर रमज़ान में एतकाफ़ करते थे।

सहीह बुखारी की रिवायत में है नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर रमज़ान में दस दिनों का एतक़ाफ करते थे और उस साल जिस साल

आप का इन्तेकाल हुआ आप ने बीस दिनों का एतकाफ़ किया। (हदीस न० २०४४)

एतकाफ मुसतहब है और कभी भी कर सकते हैं जैसा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से शव्वाल के महीने में भी एतकाफ़ करना साबित है इसी तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो को रमज़ान के अलावा महीने में एतकाफ वाली नज्र पूरी करने का हुक्म दिया था जैसा कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो अन्हमा से रिवायत है। (सहीह बुखारी-२०४३)

रमज़ान के आखिरी दस दिनों का एतकाफ़ नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पाबन्दी के साथ करते थे इसलिये रमज़ान के आखिरी दस दिनों में एतकाफ की पाबन्दी करनी चाहिए। एतकाफ मस्जिद में करना चाहिए क्योंकि एतकाफ मस्जिद के अलावा जगह में करना साबित नहीं है। एतकाफ किसी भी मस्जिद में कर सकते हैं एतकाफ के लिए जामे मस्जिद की शर्त लगाना सहीह नहीं है लेकिन सबसे अफज़ल एतकाफ़ मस्जिदे हराम, मस्जिदे नबवी और मस्जिदे अक़सा का है फिर जामे मस्जिदों में, फिर किसी भी मस्जिद में और इस बारे में मर्द व औरत बराबर हैं क्योंकि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में और आप के ज़माने में औरतें मस्जिदों में ही एतकाफ करती थीं।

एतकाफ के लिये मस्जिद के किसी एक कोने या हिस्से को अनिवार्य कर लेना ज़रूरी नहीं है बल्कि पूरी मस्जिद में एतकाफ के दौरान कहीं भी आ जा सकते हैं मस्जिद में आयोजित होने वाले तमाम दीनी व शरई प्रोग्राम में भाग ले सकते हैं।

ज़रूरत पड़ने पर एतकाफ़ के दर्मियान ही एतकाफ को तोड़ा जा सकता है और इसका कोई कफ्फारा (प्रायिश्चित) नहीं है।

ईद का चांद निकलते ही एतकाफ से निकल सकते हैं।

रमज़ान के आख़िरी दस दिन बहुत खैर व बर्कत वाले हैं इसी आखिरी दस दिनों में लैलतुल क़द्र भी है जो मुबारक रात है और हज़ार महीनों से बेहतर है। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''यकीनन हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा। तू क्या समझा कि शब्रे कद्र में क्या है? शबे क़द्र एक हज़ार महीनों से बेहतर है। इसमें हर काम को सर्अन्जाम देने को अपने रब के हुक्म से फरिश्ते और रूह (जिबरईल) उतरते हैं। यह रात सरासर सलामती की होती है और फज्र के तुलूअ् होने तक होती है।'' (सूरे क़द्र १-५)

इन आखिरी दस दिनों में ज़्यादा से ज़्यादा तौबा व इस्तेग्फार, जिक्र व अज़कार और ज़्यादा से ज़्यादा तिलावत करनी चाहिए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन रातों में खुद जागते और अपने परिवार वालों को भी जगाते थे।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कद्र की रात की तलाश की फज़ीलत के बारे में फरमायाः जो शख्स लैलतुल क़द्र का क़्याम करेगा उसके पिछले तमाम गुनाह मआफ़ कर दिये जाते हैं। (सहीह बुखारी १९०)

शबे क़द्र को पाने या उसका सवाब हासिल करने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि आखिरी पूरे दस दिनों की तमाम रातों में इबादत की जाये खास तौर से रमज़ान के आख़िरी दिनों की ताक रातें (२१,२३,२५,२७,२९) अल्लाह की इबादत व बन्दगी में गुज़ारी जाएं।

❑❑❑

इस्लाम में जानवरों के अधिकार

मौलाना कलीमुल्लाह उमरी मदनी

इस्लाम दीने रहमत है, उसकी रहमत इन्सान की हद तक सीमित नहीं है बल्कि हर जानदार के लिये है। उसकी रहमत (दया, करूणा) ने मानवता को लाभान्वित करने के साथ साथ जानवरों को भी अपनी असीमित रहमत से मालामाल किया है। इस्लाम से पहले अरब की सख्त दिली और उनके जुल्म का निशाना इन्सान के अलावा जानवर भी बनते थे वह कई तरीके से जानवरों को दुख देते और उन पर जुल्म ढ़ाते थे। जानवरों को अंधाधुंध मारना फिर लोगों को खाने की दावत देना उनके दानशीलता की पहचान थी, उनके यहां ज्यादा से ज्यादा जानवरों को जबह करने के मामले में मुकाबले हुआ करते थे, जिसमें दोनों पक्ष बारी बारी ऊंट ज़बह करते थे जो रूक जाता या जिसके ऊंट खत्म हो जाते वह बाज़ी हार जाता था। एक तरीका यह भी था कि कोई शख्स मर जाता तो उसकी सवारी के जानवरों को उसकी कब्र पर भूखा प्यासा बांध दिया जाता था। उनके लिये न चारे का इन्तेज़ाम किया जाता और न पानी का इसी हालत में वह जानवर सूख कर मर जाते थे। यह और इस तरह के दसयों जुल्म और क्रूरता का व्यवहार जमान-ए जाहिलियत में (इस्लाम धर्म के आने से पहले) किये जाते थे इस्लाम आया तो उसने जाहिलियत के इन सारे खुराफात और अत्याचार को खत्म करने का हुक्म दिया कि जानवरों के साथ बेहतर व्यवहार किया जाये। बेजुबान जानवर इन्सान के अच्छे बर्ताव के पात्र हैं।

आप स०अ०व० ने फरमायाः जो मुसलमान पेड़ लगाता है, या खेती बाड़ी करता है और उसको चिड़िया या इन्सान या कोई जानवर खाता है तो यह सदका (सवाब) का काम है। (मुस्लिम)

इतना ही नहीं बल्कि जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार पर सवाब की खुशखबरी सुनाई गयी है। सुनन इब्ने माजा की हदीस है एक सहाबी रसूल स०अ०व० से पूछते हैं कि मैंने अपने ऊंटों के लिए एक हौज़ बना रखा है, कभी कभार उस पर भूले भटके जानवर भी आ जाते हैं अगर मैं उन्हें पिला दूं तो क्या इस पर भी मुझे सवाब मिले गा? आप स०अ०व० ने फरमाया हर प्यासे या जानदार के साथ अच्छा व्यवहार करने से सवाब मिलता है। (इब्ने माजा ३६८६)

हज़रत अबू हुरैरा की रिवायत है जिसमें नबी स०अ०व० ने एक शख्स का वाक्या बयान किया है, जो प्यास की वजह से परेशान हो रहा था वह एक कुवें से पानी पीकर निकला ही था कि वह देख रहा है कि एक कुत्ता का प्यास से वैसे की बुरा हाल है जैसे कि उसका था और वह कीचड़ को चाट चाट कर अपनी प्यास बुझा रहा है। वह शख्स कुवें में दुबारा उतर कर पानी भर लाता है और कुत्ते को पिला देता है। अल्लाह को इस शख्स का यह नेक काम पसन्द आ गया और उसकी मग्फिरत कर दी। (बुखारी-६००८ अबू दावूद २५५०)

इस्लाम ने जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करने की जो शिक्षा दी है और उनके जो अधिकार बयान किये हैं उनका निम्न में यहां जिक्र किया जा रहा है।

जानवरों को सताया न जाये

इस्लाम ने जानवरों को भी चैन से जीने का हक दिया है उसकी उसूली तालीम यह है कि न खुद

तकलीफ उठाओ और न दूसरों को तकलीफ पहुंचाओ (इब्ने माजा ३४०) दूसरों को तकलीफ देना अगर्चे वह जानवर ही क्यों न हो इस्लाम के नजदीक दुरूस्त नहीं है। हज़रत रबी बिन मस्ऊद रजियल्लाहो फरमाते हैं कि एक सफर में हम रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे। आप हाजत के लिये चले गये हमने एक लाल पक्षी को देखा जिसके साथ उसके दो बच्चे भी थे हमने इन बच्चों को पकड़ लिया तो वह पक्षी दुख के मारे उन बच्चों के पास मंडलाने लगा, इतने में नबी स०अ०व० भी आ पहुंचे तो आपने फरमायाः इस पक्षी से उसके बच्चों को छीन कर किसने दुख पहुचाया है, उसके बच्चों को लौटा दो। (अबू दाऊद २६७३)

जानवरों को दुख पहुंचाना तो दूर की बात है उन्हें लानत मलामत करने से भी इस्लाम ने मना किया है। हज़रत इमाम बिन हुसैन से रिवायत है कि एक बार रसूल स०अ०व० सफर में थे। एक अन्सारी औरत ऊंटनी पर सवार ऊंटनी से ऊब गयी थी तो उसने उस पर लानत की। रसूल स०अ०व० ने जब सुना तो फरमायाः इस ऊंटनी पर जो सामान लदा हुआ है वह उतार लो और इसे (इसके बदले में आज़ाद) छोड़ दो इस लिये कि इस पर लानत की गयी है। हज़रत इमाम फरमाते हैं कि मैं अब भी इस ऊंटनी को देख रहा हूं, वह लोगों के बीच चल रही है कोई उसको रोक नहीं रहा है। (मुस्लिम ६६०४)

इस हदीस की व्याख्या में हाफिज़ सलाहुददीन यूसुफ लिखते हैं इससे मालूम हुआ कि तंगदिल होकर इन्सानों को तो दूर की बात जानवरों को भी बददुआ देना और उन पर लानत करना जाइज़ नहीं है। (रियाजुस्सालिहीन ३४४/२)

कुछ रिवायतों से यह भी मालूम होता है कि जो जानवर इन्सानों को भाइदा पहुचाता है उसकी कद्र करनी चाहिये जैसा कि जैद बिन खालिद जोहनी रजियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूल स०अ०व० ने फरमाया मुर्ग को बुरा भला न कहो, क्योंकि वह सुबह सवैरे अपनी आवाज़ के जरिये तुम्हें बेदार करता है। (मुस्नद अहमद १४२/५ ४/११५)

जो जानवर जिस काम के लिये पैदा किया गया है उससे वही काम लिया जाये।

जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार और इन्साफ यह है कि अल्लाह ने जिस जानवर को जिस काम के लिये पैदा किया है उससे वही काम लिया जाये। अगर कोई उससे दूसरा काम लेता है तो यह उसके साथ जुल्म है मिसाल के तौर पर अल्लाह ने बैल को खेती बाड़ी के लिये पैदा किया है, अगर कोई उससे गदधे की तरह बोझ ढ़ोने का काम लेता है तो इस्लाम के नजदीक यह जुल्म है।

एक बार रसूल स०अ०व० ने फरमायाः अपने जानवरों की पीठ को मिंबर न बनाओ जानवर से स्टेज का काम न लो। अल्लाह ने उन्हें तुम्हारा फरमांबरदार सिर्फ इसलिये बनाया है कि वह तुमको ऐसी जगहों पर आसानी से पहुंचा दे जहां तुम बड़ी कठिनाई के बाद पहुंच सकते थे तुम्हारे लिये अल्लाह ने जमीन को पैदा किया है, अपनी ज़रूरतें उससे पूरी करो। (अबू दाऊद २५६७)

आप से यह भी बयान किया गया है कि एक शख्स बैल से सवारी का काम ले रहा था अल्लाह की कुदरते खास से उसे बोलने की क्षमता मिल गयी तो उस बैल ने कहा मुझे इस काम के लिये नहीं पैदा किया गया।

जानवरों के आराम का ख्याल रखा जाये जिन जानवरों से काम लिया जाता है या जिन से लाभ उठाया जाता है उनके बारे में इस्लाम की तालीम यह है कि उनके आराम व राहत का पूरा पूरा ख्याल रखा जाये, उन्हें वक्त पर खिलाया जाये, अगर वह बीमार हो तो उनका एलाज कराया जाये, उनसे दुख की हालत में काम न लिया जाये, उनके रहने सहने का उचित प्रबन्ध किया

जाये और उनसे उतना ही काम किया जाये जितना वह सह सकें, उनसे उस वक्त तक काम लेना जब तक कि वह बुरी तरह थक हार कर आगे काम करने के लायक न रह जायें या उनकी हालत दयनीय हो जाने के बावजूद मारमार कर उनसे काम लेना, या उन्हें भूखा प्यासा रख कर काम लेना जुल्म है। आप स०अ०व० ने फरमाया अगर हरयाली वाली जमीन से गुजर हो तो अपनी सवारी को धीरे चलाओ और जानवर को उससे भाइदा उठाने का मौका दो और अकाल का मौसम हो तो तेज तेज चलाओ ताकि वह अपनी मंजिल पर जल्द पहुंचे और उसे खाने पीने का और आराम का मौका मिले। अबू दाऊद २५६९

एक बार आप स०अ०व० एक अन्सारी के बाग में इंसानी जरूरत के लिये गये, उसमें एक ऊंट था जो आपको देखर चीखा और रोने लगा मुहम्मद स०अ०व० उस के पास गये, उसकी कन्पटी पर हाथ रखा और वहां के लोगों से पूछा यह किस का ऊंट है? एक अन्सारी नौजवान ने आगे बढ़कर कहा मेरा है। आपने कहा क्या इस जानवर के बारे में अल्लाह से डरते नहीं जिस का अल्लाह ने तुम्हें मालिक बनाया है? इस ऊंट ने मुझसे शिकायत की है कि तुम इसे भूखा रखते हो और इस पर सख्ती करते हो। (अबू दाऊद २५४९)

एक मौके पर आपने एक ऊंट को देखा उसकी पीठ उसके पेट से लगी हुयी थी उसको खूब भूख लगी हुयी थी आपने कहा इन बेजुबान जानवरों के मामले में अल्लाह से डरो, उन पर ऐसी हालत में सवारी करो जब वह सवारी के काबिल और सेहत मन्द हों और उन्हें अच्छी हालत में थक कर चूर होने से पहले छोड़ दो। अबू दाऊद २५४८

किसी जानवर को भूखा न रखा जाये जिस तरह अपने मातहत काम करने वाले इन्सानों को भूखा रखना गुनाह है इसी तरह जानवरों को भूखा प्यासा रखना गुनाह है और यह क्रूरता इन्सान को जहन्नम में पहुंचा सकती है जैसा कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल स०अ०व० ने फरमायाः एक औरत एक बिल्ली की वजह से जहन्नम में डाल दी गयी उसने उसे बांध रखा था न तो उसने उसे खाने को दिया और न आजाद छोड़ा ताकि यह चल फिर कर जमीन के कीड़े मकूड़ों में से कुछ खा लेती। मुस्लिम ६७५

अर्बों की सख्त दिली की हद हो गयी थी कि वह जिन्दा जानवर के शरीर का मनपसन्द हिस्सा काट कर खा लिया करते थे आपने इससे सख्ती से मना किया इस तरीके से कि ''जिन्दा जानवरों का जो गोश्त काट कर खाया जाता है वह मुर्दार है'' (तिर्मिज़ी-१४८०) इसी तरह जानवरों का मुस्ला (उनके शरीर के किसी भाग को काटने से) मना फरमाया और ऐसा करने वाले पर लानत भेजी। (बुखारी ५५१५)

जानवरों को निशाना बाजी के लिये इस्तेमाल न किया जायेः किसी जानवर को निशाना बाज़ी के लिये इस्तेमाल करने या उसे बांध कर निशाना बनाने से इस्लाम ने सख्ती से रोका है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल स०अ०व० ने फरमाया ''तुम किसी जानवर को हर्गिज़ निशाना न बनाओ एक दूसरी रिवायत में है रसूल स०अ०व० ने जानवरों को बांध कर मारने से मना फरमाया है। (मुस्लिम ५०५७)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बयान करते हैं कि उन्होंने एक बार देखा कि कुछ लड़के मुर्गी को बांध कर तीर से निशाना बना रहे हैं। उन्होंने आगे बढ़कर रस्सी खोली और मुर्गी के साथ उस लड़के को पकड़ कर उसके घर वालों के पास पहुंचे और उनसे कहा अपने बच्चे को इस तरह की बेरहम हरकत से रोको क्योंकि रसूल स०अ०व० ने इस तरीके से किसी भी जानवर या जानदार को निशाना बनाने से मना

किया है। (बुखारी-५५१४)

किसी जानदार के चेहरे पर न मारा जाये और न उसको दागा जाये।

चेहरा शरीर का कमज़ोर और संवेदनशील जगह है इस भाग पर मामूली चोट भी बेहद तकलीफ देह होती है। अरब वाले चौपायों के चेहरों पर दाग़ लगाते थे और कभी कभार चेहरों पर मार भी दिया करते थे। अल्लाह के रसूल ने इस क्रूरता को देखा तो सख्ती से रोका।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहो अन्हो फरमाते हैं कि रसूल स०अ०व० ने चेहरे पर मारने और उसे दाग देने से सख्ती से मना किया है। (मुस्लिम ५५५१) हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि नबी करीम स०अ०व० का गुजर एक गदधे के पास से हुआ, जिसके चेहरे को दाग दिया गया था आपने देखा तो फरमाया उस शख्स पर अल्लाह की लानत हो जिसने उसे दागा है। (मुस्लिम ५५५२)

किसी जानवर को आग में न जलाया जाये: एक बार आप स०अ०व० सहाबए किराम के साथ सफर में पड़ाव में थे, आप ज़रूरत के लिये कहीं चले गये थे, जब वापस आये तो देखा कि एक साहब ने अपना चूलहा एक ऐसी जगह जला दिया है जहां जमीन में (या पेड़ पर) चूंटियों का बिल था। यह देख कर आप स०अ०व० ने पूछाः यह चूलहा यहां किसने जलाया है। एक साहब ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल मैंने। आप स०अ०व० ने फरमायाः इसे बुझाओ, इसे बुझाओ। (अबू दाऊद २६७५) मकसद यह था कि इन चूंटियों को दुख न हो और कहीं वह आग से जल न जायें।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद बयान करते हैं कि एक सफर में आपने चूंटियों का एक बिल जिसे हमने जला दिया था, देखकर पूछा यह हरकत किसने की है, हमने जवाब दिया कि हमने यह काम किया है। आप स०अ०व० ने फरमाया किसी जानवर को आग की सजा देने का हक केवल सृष्टिकर्ता (उसके पैदा करने वाले) को है। (बुखारी ३०१६)

जानवरों को एक दूसरे से लड़ाया न जाये: अरबों का एक दिलचस्प काम यह था कि वह जानवरों को आपस में लड़ाते और इस तमाशे से खुश होते थे। इस खेल में जानवर घायल हो कर बेहद तकलीफ उठाते थे। रसूल स०अ०व० ने जब इस अमानवीय काम को देखा तो सख्ती के साथ रोका। (अबू दाऊद २५६२)

इस्लाम में जानवरों के अधिकार के बारे में यह स्पष्ट तालीमात हैं जिनसे यह हकीक़त स्पष्ट हो गयी कि इस्लाम ने जानवरों को कितने सम्मान की निगाह से देखा है। मौलाना सैयद सुलैमान नदवी के अनुसार इन शिक्षाओं से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि इस्लाम के सीने में जो दिल है वह कितना नर्म और कितना रहम व मेहरबानी से भरा हुआ है।

दुनिया को सबसे पहले जानवरों के अधिकार से आगाह करने वाला इस्लाम ही था वर्ना इससे पहले जानवरों के अधिकार की कल्पना ही दुनिया में मौजूद नहीं थी, हो भी कैसे सकता था? जिस दुनिया में मानव अधिकार के लाले पड़े हों वहां जानवरों के अधिकार का तसव्वुर ही असंभव था?

वह लोग जो इस्लाम को खून चूसने वाला मजहब कहते हैं इन शिक्षाओं की रोशनी में जरा दिल थाम कर बतायें कि उनके दावे में कितनी सच्चाई है। इस्लाम ने जानवरों को जो अधिकार दिये हैं क्या सभ्य दुनिया ने इन अधिकारों का पात्र इन्सान को भी समझा है? हालात गवाह हैं कि आज आधुनिक सभ्यता और तथाकथित मानव अधिकार के झण्डावाहकों ने इन्सान की हालत जानवरों से भी बदतर बना रखी है।

❑ ❑ ❑

एलाने दाख़िला

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला दिल्ली में स्थापित उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्था

अलमाहदुल आली लित तखस्सुस फिद दिरासातिल इस्लामी में नये तालीमी कलैण्डर के अनुसार इस साल नये सत्र के लिये एडमीशन 20 अप्रैल से 24 अप्रैल 2024 तक लिया जायेगा। अपना अनुरोध पत्र व सनद की फोटो कापी इस पते पर भेजें।

आवेदन पत्र मिलने की आखिरी तारीख 15 अप्रैल 2024 है।

नोटः- हर क्षात्र को वज़ीफे के तौर पर हर महीने 3000/- दिया जायेगा। अधिकृत जानकारी के लिये संपर्क करें।

अहले हदीस कम्पलैक्स डी.254 अबुल फजल इन्कलेव

जामिया नगर दिल्ली-110025

फोन 011-26946205 , 011-23273407

Mob. 9213172981, 09560841844

शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

अय्यूब अलैहिस्सलाम के जीवन का पाठ

अय्यूब अलैहिस्सलाम एक नबी थे। इनकी ओर अल्लाह ने वह्य की थी। कुरआन में एक स्थान पर कहा गया है-

हमने तुम्हारी ओर उसी प्रकार 'वहय' की जिस प्रकार नूह और उसके बाद के नबियों की ओर वह्य की। और हमने इबराहीम, इसमाईल, इसहाक़ और याकूब और उसकी संतान और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलैमान की ओर भी वह्य की। और हमने दाऊद को ज़बूर प्रदान की। (सूरा-४, अन-निसा, आयत-१६३)

इससे यह भी मालूम होता है कि अय्यूब इबराहीम के बाद आए। कुछ विद्वानों का विचार है कि उनके पिता का नाम 'अमूस' था, जो ईसू-बिन-इसहाक़-बिन-इबराहीम के वंश से थे। और उनकी पत्नी 'रहमा' हज़रत यूसुफ की पोती और इफराईम-बिन-यूसुफ की पुत्री थी। यहूद की किताब 'पुराने नियम' में उनके नाम से पूरी एक किताब है, जिसके कुल बयालीस भाग हैं, जिससे पता चलता है कि आप 'अवस' के रहने वाले थे, जो दमिश्क के निकट है। और कुछ लोगों का विचार है कि 'अवस' वही नगर है जिसको 'हर्रान' कहते हैं, जो दमिश्क़ के उत्तर में स्थित है। वे बड़ी दौलत के मालिक थे। उनके कुल सात पुत्र और तीन पुत्रियां थीं। फिर ऐसा हुआ कि वे कष्टों में घिर गए, उनकी सारी दौलत जाती रही, बच्चों का देहान्त हो गया, उनको एक ऐसा रोग लग गया था कि जिसके कारण सब लोगों ने उनका साथ छोड़ दिया। केवल उनकी पत्नी उनके पास रह गई। परन्तु वे बड़े साहस के साथ सब्र करते रहे और अल्लाह से दुआ की जिसे अल्लाह ने कुरआन में इस प्रकार बयान किया है-

हमारे बन्दे अय्यूब को भी याद करो, जब उसने अपने रब को पुकारा कि शैतान ने मुझे दुःख और पीड़ा पहुंचा रखी है। (सूरा-३८, सॉद, आयत-४१)

यहाँ यह कहा गया है कि शैतान ने मुझे पीड़ा पहुंचाई, जबकि इस्लामी शिक्षा के अनुसार सुख और दुःख देने वाला केवल अल्लाह है। हो सकता है अय्यूब ने दुःख और पीड़ा को अल्लाह की तरफ सम्बद्ध करने के बजाए शैतान की तरफ इसलिए सम्बद्ध किया हो कि उसी के भ्रम के कारण उनको यह दिन देखने पड़े। या अल्लाह की ओर सम्बद्ध करने को उन्होंने उसके सम्मान के विरुद्ध समझा हो। एक दूसरी आयत में इस दुःख को शैतान की ओर सम्बद्ध नहीं किया गया है।

याद करो जब अय्यूब ने अपने रब को पुकारा कि मुझे बहुत कष्ट पहुंचा है, और तू सबसे बढ़कर दयावान है। (सूरा-२१, अल-अंबिया, आयत-८३)

अल्लाह अय्यूब के धैर्य का वर्णन करके ईमानवालों को बताना चाहता है कि तुमसे पहले नबियों और रसूलों को भी बहुत कष्ट उठाना पड़ा है, परन्तु उन्होंने धैर्य से काम लिया। और अल्लाह के धर्म को नहीं छोड़ा, बल्कि जो कुछ उनको पीड़ा पहुंच रही थी, उस पर प्रसन्नता के साथ सब्र किया और अल्लाह ही से प्रार्थना करते रहे कि हमारी पीड़ा समाप्त कर दे। अय्यूब के साथ भी ऐसा ही हुआ, उन्होंने भी अल्लाह से ही प्रार्थना की। अल्लाह ने उनकी सुन ली और उनको आदेश दिया-

अपना पाँव धरती पर मार, यह नहाने और पीने के लिए ठण्डा पानी है। (सूरा-३८, सॉद,

आयत-४२)

अर्थात इस स्रोत से जो पानी निकलेगा जब तुम उसमें नहाओगे तो बाहर की बीमारी और पियोगे तो अन्दर की बीमारी सब दूर हो जाएगी।

यही नहीं बल्कि- ''और हमने उसे उसके परिजन दिए, बल्कि उतना ही और उसको अपनी विशेष कृपा से दिया। इसमें बुद्धिमानों के लिए शिक्षा है।'' (सूरा-३८, आयत-४३)

अर्थात उसके परिवार को उससे दुगना कर दिया जितना वह पीड़ा के समय में था और नष्ट हो गया था। कहा जाता है कि अल्लाह ने उनकी पत्नी को जवान कर दिया जिससे सात बेटे और तीन बेटियां पैदा हुईं। (दे. बाइबल, अय्यूब, ४२:१३)

इस प्रकार उनकी संतान दोबारा आबाद हो गई, बल्कि दुगनी हो गई। उनके साथ केवल उनकी पत्नी रह गई थी जो उनकी पूरी सेवा करती थी। लेकिन किसी अवसर पर आप उससे गुस्सा हो गए और यह क़सम खा ली कि जब मैं स्वास्थ हो जाऊंगा तो तुम्हें सौ कोड़े मारूंगा। अय्यूब को अल्लाह ने आदेश दिया-

''अपने हाथ में तिनकों का एक मुटठा ले और उसको मार दे और अपनी क़सम न तोड़। निश्चय ही हमने उसे धैर्यवान पाया, क्या ही अच्छा बन्दा! निस्संदेह वह अपने रब की ओर बड़ा ध्यान देने वाला था। (सूरा-३८, साद, आयत-४४)

इस प्रकार अल्लाह ने उनकी क़सम की लाज रखी और उनकी नेक पत्नी को भी कष्ट से बचा लिया।

इन आयतों से विद्वानों ने बहुत से इस्लामी नियम निकाले हैं, जिनके वर्णन का यहां अवसर नहीं है।

इस प्रकार अल्लाह ने अपने भक्त अय्यूब को अपनी विशेष कृपा से यह आज्ञा दी कि ऐसी पत्नी को, जो तुम्हारी सेवा करती रही हो अगर सौ कोड़े मारने की तुमने क़सम खा ही ली है तो उसको सौ तिनकों वाली झाड़ू से एक बार मार दो। तुम्हारी क़सम पूरी हो जाएगी।

अय्यूब का जो जीवन-चरित्र कुरआन में मिलता है, उससे पता चलता है कि दुर्घटना के समय वे पूरे शरीर तथा आत्मा के साथ अल्लाह की ओर ध्यान लगाए रहते थे और उसी से प्रार्थना करते थे कि उनका कष्ट दूर हो जाए। और वास्तव में यही तौहीद है, क्योंकि तौहीद पर विश्वास करने वाला अल्लाह के अलावा किसी जिन्न या शैतान पर भरोसा नहीं करता और न उनको ऐसे समय में पुकारता है, जैसा कि मक्का के विधर्मी किया करते थे। इसलिए उनकी जीवनी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी हमारा सहायक नहीं जो कष्ट के समय हमारी सहायता कर सके। और यही तौहीद है जिसकी दावत लेकर सारे नबी पध ाारे।

उनका १४० वर्ष की आयु में देहान्त हुआ और तीन पीढ़ियों तक अपना वंश देखा। वह कुआं जिससे आप नहाते थे, आज भी शाम में 'नवा' नामक एक गांव में पाया जाता है जिसे लोग अय्यूब का कुआं कहते हैं और यहीं उनका मक़बरा भी है। इनके विषय में कुछ और जानकारी यहूद की पुराने नियम की किताब अय्यूब में पाई जाती है जिससे मालूम होता है कि शैतान ने उनको बहुत बहकाने की कोशिश की, परन्तु वे अपने विश्वास (तौहीद) पर जमे रहे। यह किताब उनकी संक्षिप्त जीवनी, तथा उनके मित्र तेमानी एलिपज़, शूही बिलदद और सोपर के साथ प्रश्नोत्तर पर आधारित है जो काव्य-शैली में है।

इस किताब में कहीं भी मूसा तथा बनी-इसराईल का वर्णन नहीं आया है। इसलिए संभावना यही है कि उनका जीवन-काल इबराहीम अलैहिस्सलाम के बाद और मूसा से पहले था। (कुरआन की इन्साइक्लो पीडिया से)

Posted On 24-25 Every Month
Posted At LPC, Delhi
RMS Delhi-110006
"Registered with the Registrar of Newspapers for India"

MARCH 2024
RNI - 53452/90
P.R.No.DL (DG-11)/8065/2023-25

ISLAH-E-SAMAJ

4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006

अहले हदीस मंज़िल की तामीर व तकमील के सिलसिले में

सम्माननीय अइम्मा, खुतबा, मस्जिदों के संरक्षकों और जमईआत के पदधारियों से पुरजोर अपील व अनुरोध

अहले हदीस मंज़िल में चौथी मंज़िल की ढलाई का काम हुआ चाहता है और अन्य तीनों मंज़िलों की सफाई की तकमील के लिये आप से अनुरोध है कि आने वाले जुमा में नियमित रूप से अपनी मस्जिदों में इसके सहयोग के लिये पुरज़ोर एलान फरमायें और नीचे दिये गये खाते में रकम भेज कर जन्नत में ऊंचा मक़ाम बनाएं और इस सद-क़-ए जारिया में शरीक हों।

सहयोग के तरीक़े (१) सीमेन्ट सरिया, रोड़ी, बदरपुर, रेत (२) नक़द रक़म (३) कारीगरों और मज़दूरों की मज़दूरी की अदायगी (४) खिड़की, दरवाज़ा, पेन्ट, रंग व रोगन का सामान या क़ीमत देकर सहयोग करें और माल व औलाद और नेक कार्यों में बर्कत पाएँ।

paytm UPI

A/c Name : Markazi Jamiat Ahle Hadees Hind
A/c No. **629201058685** (ICIC Bank)
Chandni Chowk, Delhi-110006
(RTGS/NEFT/IFSC CODE ICIC0006292)
पता:-4116 उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद, दिल्ली-110006
Ph. 23273407, Fax : 23246613

अपील : सदस्यगण, मर्कज़ी जमीअत अलहे हदीस हिन्द

Total Pages 28

28